अध्याय 27

निवासस्थान के लिए निर्देश (भाग 3)

अध्याय 27 में, परमेश्वर ने तम्बू के आँगन के विषय में निर्देश दिए-तम्बू के चारों ओर का स्थान। उसने पहले यह वर्णन किया कि किस प्रकार मूसा को पीतल की वेदी का निर्माण करना था जो आँगन में खड़ी रहेगी (27:1-8) और इसके बाद उसने परदों का एक बाड़ा बनाने के निर्देश दिए जो आँगन को घेरे थे और उसे सीमांकित करते थे (27:9-19)। यह अध्याय उस तेल के विषय में संक्षिप्त टिप्पणी के साथ समाप्त होता है जो तम्बू में प्रकाश देने के लिए जलाया जाता था (27:20, 21)।

जिस प्रकार अध्याय 25 और 26 में सामग्रियों के विवरण में धूप-वेदी को सम्मिलित नहीं किया गया, उसी प्रकार अध्याय 27 में भी एक रोचक अनुपस्थिति है: पीतल की हौदी का विवरण। यहाँ तक भी कि पीतल कि हौदी आँगन में पाई जाती थी, फिर भी इसके निर्माण के निर्देश 30:17-21 तक दिखाई नहीं पड़ते।

पीतल की वेदी (27:1-8)

1"फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की, पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनवाना; वेदी चौकोर हो, और उसकी ऊँचाई तीन हाथ की हो। 2और उसके चारों कोनों पर चार सींग बनवाना; वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों, और उसे पीतल से मढ़वाना। 3और उसकी राख उठाने के पात्र, और फावड़ियाँ, और कटोरे, और काँटे, और अंगीठियाँ बनवाना; उसका कुल सामान पीतल का बनवाना। 4उसके लिए पीतल की जाली की एक झंझरी बनवाना; और उसके चारों सिरों में पीतल के चार कड़े लगवाना। 5और उस झंझरी को वेदी के चारों ओर की कंगनी के नीचे ऐसे लगवाना कि वह वेदी की ऊँचाई के मध्य तक पहुँचे। 6और वेदी के लिये बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हें पीतल से मढ़वाना। 7और डण्डे कड़ों में डाले जाएँ कि जब जब वेदी उठाई जाए तब वे उसके दोनों किनारों पर रहें। 8वेदी को तख़्तों से खोखली बनवाना; जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई गई है वैसी ही बनाई जाए।"

आयत 1. निर्गमन 27:1-8 में वे निर्देश दिए गए हैं जो मूसा को होमबलि की **वेदी** के निर्माण के लिए प्राप्त हुए थे। जिस संरचना को यहाँ पर साधारण तौर पर "वेदी" कहा गया है उसका उल्लेख बाद के वर्णन में "होमबलि की वेदी के रूप में हुआ है" (30:28; 31:9; 38:1; देखें लैव्य. 4:7, 10, 18)। यह वेदी एक खोखला संदूक थी (27:8) जो **बबूल** की लकड़ी के ऊपर "पीतल" चढ़ा कर बनाई गई थी (27:2)। यह नाप में लगभग **पाँच हाथ चौड़ी और पाँच हाथ लम्बी थी ... और चौकोर थी** और उसकी ऊँचाई **तीन हाथ थी** (7½' चौकोर और 4½' ऊँची)।

इस वेदी और उस वेदी के मध्य का सम्बन्ध अनिश्चित है जिसका वर्णन 20:24-26 में किया गया है। इन दो वाक्यांशों को अतिरिक्त के रूप में देखा जा सकता है। हो सकता है कि जिस वेदी का अध्याय 27 में वर्णन किया गया है उसने संरचना प्रदान की थी, जबकि अध्याय 20 का विवरण संकेत करता है कि संरचना के अंदर क्या कार्य होना था: मिट्टी और, अथवा पत्थर।[1] एक अन्य सम्भावना यह भी है कि दो अलग-अलग वेदियों का वर्णन किया गया है; सम्भवतः उनके अलग-अलग कार्य थे और उन्हें विभिन्न समयों पर उपयोग किया जाता था। जिस वेदी का अध्याय 20 में वर्णन किया गया है हो सकता है उसका उपयोग केवल होमबलि की वेदी के निर्माण तक या इस्राएलियों के जंगल में बिताए गए समय तक ही किया गया था। बाद में, पशुओं को केवल तम्बू (या मन्दिर) के आँगन की वेदी पर ही बलि किया जाता था। इसका कोई भी अनुवाद पूर्णतया संतोषप्रद नहीं है।

आयत 2. वेदी के **चारों कोनों** पर **पीतल** से मढ़े गए **सींग थे**। इन्हें सींग कहा जाता था, सम्भवतः यह इस कारण है कि ये एक मवेशी के सींगों के समान दिखाई देते थे। ये सींग वेदी से जुड़े हुए थे, जो **उस समेत एक ही टुकड़े के थे**। सम्भवतः उनका उपयोग बलिदानों को वेदी पर उपयुक्त स्थान पर बाँधने के लिए किया जाता था (भजन 118:27)।[2] जब बलिदान चढ़ाए जाते थे, तो लहू को सींगो पर छिड़का जाता था (निर्गमन 29:12; लैव्य. 4:27)। सम्भवतः ये सींग "शक्ति, सहायता, और पवित्रस्थान का प्रतीक थे (तुलना 1 शमूएल 2:1, 10; 2 शमूएल 22:3; 1 राजा 1:50; 2;28; भजन 89:17; 112:9)।"[3] इसके साथ ही, इस्राएल में एक परम्परा और उठ खड़ी हुई कि एक व्यक्ति वेदी के सींगों को पकड़ने के द्वारा शरण पा सकता था (देखें 1 राजा 1:49-53; 2:28-34)। पुरातत्ववेत्ताओं ने मग्गिद्दो, गेज़ेर, और बेर्शेबा के समान स्थानों पर चार सींगों सहित पत्थर की वेदियों की खोज की है।[4]

आयत 3. मूसा को वेदी के साथ उपयोग किए जाने वाले **बर्तन -** उसकी **राख उठाने के पात्र, और फावड़ियाँ, और कटोरे, और काँटे, और अंगीठियों** का निर्माण करने के निर्देश भी दिए गए थे। इन सभी का निर्माण **पीतल** से किया जाना था। जॉन आई. डरहम ने लिखा,

> वेदी की वस्तुओं में ... राख उठाने के लिए एक घड़ा या एक बाल्टी, इसके साथ ही इस कार्य के लिए एक फावड़ा, और तेज द्रव्यों के लिए कटोरे, और माँस को और चर्बी को जलाते समय परिचालन के लिए काँटे, और आग के कोयलों को

पकड़ने और स्थानान्तरित करने के लिए विशेष बर्तन सम्मिलित थे।[5]

आयतें 4, 5. निर्देश एक **मध्य तक ऊपर उठी हुई, झंझरी** के विषय में बात करते है, जिसका कार्य सम्भवतः **पीतल की जाली को** सहारा देना था। यदि यह सन्दूक के बाहर थी, तो इसने उस समय याजकों को खड़े होने का एक स्थान प्रदान किया होगा जब वे बलिदान चढ़ाया करते थे।

यह अस्पष्ट है कि या तो आग जाली के नीचे लगाई जाती थी और बलिदान उसके ऊपर रखा जाता था, अथवा यह कि आग के लिए लकड़ी और बलिदान दोनों को जाली के ऊपर रख दिया जाता था। चाहे कुछ भी हो, धातु से बनी ऊपरी संरचना ने लकड़ी के ढाँचे को आग से बचाए रखा था। वेदी को उस पर बलिदानों के जलाए जाने से पहले आंशिक रूप से या पूर्णतया मिट्टी से भर दिया जाता होगा, जो आग की लपटों से पीतल चढ़ी हुई लकड़ी की रक्षा करता था।

आयतें 6-8. वेदी निश्चय ही बड़ी, वजनदार और भारी-भरकम रही होगी। फिर भी, इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक उठाकर ले जाने के लिए बनाया गया था। **डण्डों** को **कड़ों** के मध्य टिकाने की व्यवस्था की गयी थी, जिससे इसे ढोना सरल हो गया था (27:4-7)।

अध्याय 27 यह प्रकट नहीं करता कि वेदी का उपयोग किस प्रकार किया जाना था; इसके ऊपर चढ़ाए गए बलिदानों के प्रति पाठक के परिचित होने की कल्पना की गई है। इन बलिदानों के विषय में अतिरिक्त निर्देश लैव्यव्यवस्था में दिए गए हैं। वेदी पर चढ़ाए गए बलिदानों के उद्देश्यों में कई विभिन्नताएं थीं, परन्तु उनका मुख्य कार्य पाप के लिए प्रायश्चित करना था (लैव्य. 4:18-20)। वेदी पर एक पशु को बलि किए जाने के साथ ही "वेदी के सींगों पर कुछ लहू" लगाने के द्वारा और शेष बचे हुए लहू को वेदी की तली में उंडेल दिया जाता था। प्रायश्चित के वार्षिक दिवस पर, महायाजक बलि पशु के बहाए गए लहू में से कुछ लेकर अति पवित्र स्थान में लोगों के प्रायश्चित के लिए ले जाया करता था (लैव्य. 16)। होमबलि की वेदी उस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग थी जिसके द्वारा इस्राएल क्षमा की याचना करता और उसे प्राप्त करता था।

नया नियम यह सिखाता है, कि इन बाद के दिनों में, मसीह हमारा बलिदान और महायाजक दोनों ही है जो अति पवित्र स्थान में बलिदान का लहू ले जाता है (इब्रा. 8:1; 9:11-15)। आज उसके लहू के द्वारा लोग बचाए जाते हैं (इफि. 1:7)। इसके साथ ही, वेदी की शब्दावली का उपयोग उस समय किया जाता है जब एक मसीही को स्वयं को परमेश्वर के लिए एक "जीवित ... बलिदान" के रूप में देने के लिए बुलाया जाता है (रोमियों 12:1, 2)।

निवास-स्थान का आँगन (27:9-19)

[9]"फिर निवास के आँगन को बनवाना। उसके दक्षिण की ओर के लिये बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के परदे हों, उसकी लम्बाई सौ हाथ की हो; एक किनारे पर इतना ही हो। [10]और उनके लिए बीस खम्भे बनें, और इनके लिये पीतल की बीस

कुर्सियाँ बनें, और खम्भों के कुन्डे और उनकी पट्टियाँ चाँदी की हों। 11और उसी प्रकार आँगन के उत्तर की ओर की लम्बाई में भी सौ हाथ लम्बे परदे हों, और उनके लिए भी बीस खम्भे और इनके लिये भी पीतल के बीस खाने हों; और उन खम्भों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की हों। 12फिर आँगन की चौड़ाई में पश्चिम की ओर पचास हाथ के परदे हों, उनके लिए खम्भे दस और खाने भी दस हों। 13पूरब की ओर आँगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो। 14आँगन के द्वार की एक ओर पन्द्रह हाथ के परदे हों, और उनके लिए खम्भे तीन और खाने तीन हों; 15और दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के परदे हों, उनके लिए भी खम्भे तीन और खाने तीन हों। 16आँगन के द्वार के लिये एक परदा बनवाना, जो नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो, उसके लिए खम्भे चार और खाने भी चार हों। 17आँगन के चारों ओर के सब खम्भे चाँदी की पट्टियों से जुड़े हुए हों, उनके कुन्डे चाँदी के और खाने पीतल के हों। 18आँगन की लम्बाई सौ हाथ की, और उसकी चौड़ाई पचास हाथ की, और उसके कनात की ऊँचाई पाँच हाथ की हो, उसकी कनात बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की बने, और खम्भों के खाने पीतल के हों। 19निवास स्थान के भाँति भाँति के बर्तन और सब सामान और उसके सब खूँटे और आँगन के भी सब खूँटे पीतल ही के हों।"

आयतें 9-13. परमेश्वर ने आगे निवास-स्थान के आँगन के निर्माण के निर्देश दिए। तम्बू एक **आँगन** से घिरा हुआ था जो **पचास हाथ लम्बा** (150') से **पचास हाथ** (75') का था। आँगन की सीमा को **सूक्ष्म सनी** के कपड़े से बने हुए **परदों** के द्वारा निर्धारित किया गया था जो **खम्भों** की एक श्रृंखला से जुड़े हुए थे। इन खम्भों को पाँच हाथ दूरी पर (7½') रखा गया था। तम्बू का द्वार सदैव एक ही दिशा-पूर्व की ओर मुँह करके रखा जाना था। पूर्व की ओर की "दीवार" के मध्य में एक बीस हाथ चौड़ा (30') **द्वार** बनाया जाना था (27:16)।

आयतें 14, 15. द्वार की प्रत्येक ओर **तीन खम्भों** सहित, एक **पन्द्रह हाथ** (22½') की आंशिक दीवार होगी। इस्राएलियों को खम्भों को आधार प्रदान करने के लिए **खानों** का निर्माण करना था। खाने "पीतल" से बनाए जाने थे, परन्तु "कुंडे" और "पट्टियाँ" जो "परदों" को खम्भों से जोड़ने के लिए उपयोग किए जाते थे उन्हें "चाँदी" से बनाया जाना था (27:17)।

आँगन को एक स्थायी दीवार के साथ बंद नहीं किया गया था। बाड़ा, तम्बू के समान ही, उठाने योग्य होने के लिए बनाया गया था। चलायमान खम्भों के ऊपर लटके हुए कपड़े से बने एक बाड़े को शीघ्रता पूर्वक खड़ा और फिर से गिराया जा सकता था।

निवास स्थान के आँगन के लिए निर्देशों का प्रदान किया जाना सम्पूर्ण तम्बू के भवन-समूह का दृश्य बनाना सम्भव बनाता है। पीटर एन्स ने इसे इस प्रकार वर्णित किया:

> सम्पूर्ण संरचना का नाप उत्तर और दक्षिण की ओर 150' और पूर्व और पश्चिम की ओर 75' था, इस कारण यह 75' और 75' के दो वर्गों से मिलकर एक आयत

का निर्माण करता था। एक वर्ग ने बाहरी आँगन का निर्माण किया, जिसमें होमबलि की वेदी, जो लगभग एक 7'6" की वर्गाकार संरचना थी, और पवित्र स्थान में प्रवेश द्वार पर हाथ धोने का बर्तन रखे गया था। अगले वर्ग के भीतर पवित्र स्थान था, एक आयत जिसका नाप 30' और 15' था, जो सम्पूर्ण तम्बू के अनुपातों के समान था। साथ जुड़े हुए अति पवित्र स्थान का नाप एक 15' का सटीक वर्ग था।[6]

आयतें 16, 17. आँगन का तीस-फुट-चौड़ा **द्वार** (या **परदा**) आँगन के चारों ओर की "दीवार" के शेष भागों से उस बात में भिन्न था, क्योंकि यह एक अन्य प्रकार की सामग्री से मिलकर बना था। वास्तव में, आँगन के परदे में, उस परदे के समान ही सामग्री थी जो पवित्र स्थान को अति पवित्र स्थान से अलग करता था - **नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े** और **बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कामदार** जो आँगन की शेष दीवार के लिए उपयोग किया जाता था। हालाँकि, द्वार में भी उसी प्रकार के **खाने** और **खम्भे** थे, और उसे भी आँगन की शेष दीवार के समान दूरी पर रखा जाता था। सम्भवतः, जब तम्बू "व्यवहार के लिए खुला होता था" - और इस्राएली बलिदान चढ़ाने के लिए स्वतंत्र होते थे, द्वार के लिए उपयोग किया जाने वाला परदा पीछे खींचा जा सकता था, अधिकांश उसी प्रकार जिस प्रकार किसी खिड़की या मंच का पर्दा पीछे खींचा जा सकता है। एक अन्य सम्भावना यह है कि परदे को पीछे हटा लिया जाता था थी जिससे इसने आँगन में प्रवेश करने के प्रत्येक छोर पर एक मार्ग प्रदान किया, परन्तु यह फिर भी आँगन के बाहर के लोगों से भीतर की वस्तुओं को छिपा रखता था। द्वार पर खड़े तीन या चार खम्भों ने आँगन में प्रवेश करने के लिए किसी को भी रोका नहीं होगा।

आयतें 18, 19. बाड़े की **ऊँचाई पाँच हाथ**, या 7½' थी - जो दस हाथ के तम्बू से पर्याप्त कम थी। इसी कारण तम्बू की चोटी को बाहर से देखा गया होगा, परन्तु द्वार को खोले बिना बाड़े के बाहर खड़े किसी व्यक्ति के लिए तम्बू के एकदम भीतर देख पाना सम्भव नहीं रहा होगा।

शब्द केवल यह संकेत देने के सिवाय कि इसमें वेदी रखी गई थी, आँगन के महत्व या उपयोग के विषय में बात नहीं करता। स्पष्ट तौर पर, आँगन ने बलिदान चढ़ाने के लिए एक स्थान उपलब्ध करवाया। इसके अतिरिक्त, इसने लोगों को सामाजिक अवसरों पर एकत्र होने के लिए एक क्षेत्र भी प्रदान किया, विशेषतः तब जब वे यहोवा के लिए बलिदान लेकर आते थे। आर. एलन कोल ने कहा कि चूंकि "लोग यहोवा के तम्बू में केवल विशेष उद्देश्यों के लिए, और साधारण तौर पर केवल पर्वों के अवसर पर जाते थे।" इसलिए आँगन ने "पवित्रता की बाहरी सीमा को चिन्हित किया" और भीड़ों के लिए "भरपूर स्थान" प्रदान किया।[7] गिनती 15:14 के अनुसार, एक "बाहरी" (गैर-इस्राएली) जो इस्राएल के साथ यात्रा कर रहा था वह इस्राएलियों के समान ही "एक होमबलि" चढ़ा सकता था। नया नियम आँगन के विषय में कुछ विशिष्ट नहीं बताता।

दीपक के लिए तेल (27:20, 21)

[20]"फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देना, कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के निकाला हुआ जैतून का निर्मल तेल ले आना, जिससे दीपक नित्य जलता रहे। [21]मिलापवाले तम्बू में, उस बीचवाले परदे से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा, हारून और उसके पुत्र दीवट साँझ से भोर तक यहोवा के सामने सजा कर रखें। यह विधि इस्राएलियों की पीढ़ियों के लिये सदैव बनी रहेगी।"

आयत 20. तम्बू में **प्रकाश** दीप के द्वारा दिया जाता था, जो सम्भवतः सुनहरे दीवट का सन्दर्भ देता है। यहाँ पर "दीपक" (נֵר, *नेर)* का उल्लेख एकवचन में तब भी किया गया है जबकि दीवट के ऊपर सात "दीपकों" को रखा जाता था (25:31-40)। एक अन्य सम्भावना यह है कि यह एक दीवट से अलग दीपक था जिसे विशेष तौर पर रात के समय प्रकाश देने के लिए बनाया गया था।[8]

याजकों को दीपक को **नित्य जलाए** रखना था। केवल एक निश्चित प्रकार का तेल - **कूट के निकाला हुआ जैतून का निर्मल तेल** - दीपक में उपयोग किया जाना था। टिप्पणीकार टिप्पणी करते हैं कि यह सबसे उत्तम प्रकार का जैतून का तेल था।

आयत 21. याजकों को इसे **साँझ से भोर तक** जलाए रखने के निर्देश दिए गए थे यह तथ्य इस बात पर बल देता है कि इसे पूरी रात के साथ ही पूरे दिन भर जलाए रखना था। एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि दीपक को संध्या में जलाया जाता था, और रात भर जलाकर रखा जाता था, और भोर में बुझा दिया जाता था; निर्गमन 30:8 और 1 शमूएल 3:3 का उद्धरण इसके समर्थन में दिया गया है।[9] यह अनुवाद तब सम्भव है यदि "नित्य" (27:20) का अर्थ "नियमित" या "प्रतिरात्रि" या "प्रतिदिन" के रूप में समझा जाए। हालाँकि, अधिक सम्भावित तौर पर यह प्रतीत होता है कि 30:8 एक संध्या के नित्य-कर्म का वर्णन करता है जिसमें याजक दीपकों को छाँटकर तेल डालता था। शेष समय में दीपक जलते रहते थे। चूंकि, तम्बू को ढंकने वाले परदों को कोई प्रकाश भेद नहीं सकता था, इसलिए दीपकों के प्रकाश की रात के समान ही दिन में भी आवश्यकता पड़ती थी। नित्य जलने वाली ज्योति के महत्व का संकेत इस तथ्य के द्वारा दिया गया है कि इस आवश्यकता को **इस्राएल के पुत्रों के लिए उनकी पीढ़ियों तक एक निरंतर विधि** के रूप में बताया गया है।

शब्द यह वर्णन करता है कि तेल का उपयोग किस प्रकार किया जाता था और ज्योति के जलते रहने के महत्व पर बल देता है, परन्तु यह तेल को कोई भी सांकेतिक अर्थ नहीं देता। मसीही, इस ज्योति के विषय में पढ़ते हुए, सम्भवतः यीशु के इन वचनों को स्मरण कर सकते हैं: "और लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें" (मत्ती 5:14-16)।

अनुप्रयोग

बलिदान तब और अब (27:1-8)

अध्याय 27 में परमेश्वर ने मूसा को होमबलि के लिए वेदी बनाने के निर्देश दिए। इस वेदी का उपयोग परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के लिए किया जाता था। इस कारण, यह वाक्यांश, तब और अब, दोनों बलिदानों के विषय पर विचार करने में हमारी सहायता कर सकता है।

बलिदान तब। शब्द यह प्रकट नहीं करता कि वेदी को किस प्रकार उपयोग किया जाने वाला था। पहले पाठकों को इस जानकारी की आवश्यकता नहीं थी; वे इस तथ्य से परिचित थे कि इस पर बलिदान चढ़ाए जाते थे।

उन बलिदानों के विषय में अतिरिक्त निर्देश लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में दिए गए हैं। वहाँ पर, हम बलिदानों के कई प्रकार के उद्देश्यों के विषय में सीखते हैं। उन बलिदानों के मध्य दोषबलियाँ, पापबलियाँ, सम्पूर्ण होमबलियाँ, और मेलबलियाँ - और इसके साथ ही धन्यवाद के बलिदान और स्वेच्छा से चढ़ाए बलिदान और जब मन्नत मानी जाती थी तो उस समय चढ़ाए जाने वाले बलिदान सम्मिलित हैं। कुछ बलिदानों (सम्पूर्ण होमबलियाँ) के लिए, सम्पूर्ण पशु को वेदी पर जलाया जाता था। अन्यों के लिए (मेलबलियों के समान), पशु का एक भाग वेदी पर जलाया जाता था और दूसरा भाग बलिदान चढ़ाने वालों के द्वारा खाया जाता था। याजकों को भी बलिदानों में से एक भाग दिया जाता था।

हालाँकि कुछ गैर-पशु बलिदान भी चढ़ाए जाते थे, वेदी का मुख्य उद्देश्य पापों के प्रायश्चित के लिए पशु बलियों को जलाना था (देखें लैव्य. 4:18-20)। वेदी पर एक पशु को बलि किए जाने के साथ ही "वेदी के सींगों पर कुछ लहू" लगाने के द्वारा और शेष बचे हुए लहू को वेदी की तली में उंडेल दिया जाता था (लैव्य. 4:18)। प्रायश्चित के वार्षिक दिवस पर, महायाजक बलि पशु के बहाए गए लहू में से कुछ लेकर अति पवित्र स्थान में लोगों के प्रायश्चित के लिए ले जाया करता था (लैव्य. 16)। होमबलि की वेदी उस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग थी जिसके द्वारा इस्राएल क्षमा की याचना करता और उसे प्राप्त करता था।

बलिदान अब। नया नियम सिखाता है कि जो लोग नई वाचा के अधीन हैं मसीह उनके लिए बलिदान है। इसके अतिरिक्त, वह महायाजक है जो बलिदान का लहू अति पवित्र स्थान में लेकर जाता है (इब्रा. 8:1; 9:11-15; देखें इफि. 5:2; 1 कुरि. 5:7)। मसीही उसके लहू के द्वारा बचाए गए हैं (इफि. 1:7)। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम मसीह के लिए क्या करते हैं-यदि हम उसके लिए मर भी जाएं तो भी-किसी भी भाव से हमारे बलिदान या हमारे उपहार हमारे पापों के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकते।

भले ही हमारे उपहार हमारे पापों को नहीं ढाँपते, फिर भी हमें याजकों के रूप में हमें "यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर को ग्रहणयोग्य आत्मिक बलिदान चढ़ाने है" (1 पतरस 2:5)। एक बलिदान एक भेंट हैं; यह ऐसी कोई भी वस्तु है जो हम परमेश्वर को चढ़ाते या देते हैं।

हमें अपने आपका भी एक बलिदान चढ़ाना है। वेदी कि शब्दावली का उपयोग तब किया जाता है जब एक मसीही को स्वयं को परमेश्वर के लिए एक "एक जीवित ... बलिदान" करने लिए बुलाता है (रोमियों 12:1, 2)। यीशु ने प्रत्येक मसीही को स्वयं को चढ़ाने, यहाँ तक कि मृत्यु तक भी, बुलाया है, जब उसने यह कहा कि प्रत्येक को "अपना क्रूस उठाना" और उसके पीछे चलना चाहिए (मत्ती 16:24; देखें फिलि. 2:17)।

हमें अपने होंठों की प्रशंसा का बलिदान चढ़ाना है। इब्रानियों 13:15 कहता है. "इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" हमें एक गीत में परमेश्वर की स्तुति करनी है, "धीरज और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो। ताकि तुम एक मन और एक स्वर में हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति करो" (रोमियों 15:5, 6)। हम बलिदान चढ़ाने के लिए एक वेदी पर पशुओं को लेकर नहीं आते; बल्कि, जब हम सभा में गाने के लिए एक साथ एकत्र होते हैं तब हम परमेश्वर की स्वर्गीय वेदी के सामने अपने होंठों की स्तुति रखते हैं।

हमें भले कामों का एक बलिदान चढ़ाना है। इब्रानियों 13:16 कहता है, "भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।" दूसरों के साथ भलाई करना और जो हमारे पास है उसे उनके बाँटना एक ऐसा बलिदान समझा जाता है जो हम परमेश्वर को चढ़ाते हैं। दूसरों के लिए प्रेम दिखाने के द्वारा हम, हम परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रकट करते हैं।

हमें अपने धन का एक बलिदान चढ़ाना है। पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा कि उसने इपफ्रुदीतुस से वह उपहार प्राप्त किया था जो उन्होंने उसके पास भेजा था। उसने उस उपहार को "सुखदायक सुगन्ध, ग्रहण करने योग्य बलिदान, परमेश्वर को भाने वाला" कहा (फिलि. 4:18)। एक मिशनरी के लिए एक कलीसिया को धन का एक उपहार देना - एक भाव से कलीसिया और मिशनरी के लिए एक उपहार है - परन्तु यह परमेश्वर के लिए भी एक बलिदान है, यहोवा के लिए एक भेंट या बलिदान।

हमें बची हुई आत्माओं का एक बलिदान परमेश्वर को चढ़ाना है। पौलुस को "अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का सेवक होने का" सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उसने "अन्यजातियों को मानो चढ़ाया जाने" के विषय में लिखा (रोमियों 15:16)। यह चित्रण पौलुस का परमेश्वर के सामने एक याजक के समान बलिदान चढ़ाते हुए वर्णन करती है। पौलुस क्या चढ़ा रहा था? अन्यजातियों को, वे लोग जिनके सामने उसने प्रचार किया और जो उसके प्रचार के द्वारा बच गए थे। इसी प्रकार, जब दूसरों को प्रचार करते हैं और उद्धार की ओर उनका नेतृत्व करते हैं, तो वे परमेश्वर के प्रति हमारा बलिदान बन जाते हैं।

हम अपने पापों के बदले अपना लहू नहीं दे सकते। मसीह ने एकमात्र ऐसा बलिदान दिया है जो पापों को दूर कर देता है। क्योंकि हम मसीह के लहू के द्वारा बचाए गये हैं, हमें उसे बलिदान चढ़ाने हैं। क्या हम वे बलिदान चढ़ा रहे हैं जो हमें

चढ़ाने चाहिए, या हम उसे उससे कम दे रहे जितने कि उसे अभिलाषा है और जितने के वह योग्य है?

एक मसीही का बलिदान (27:1-8)

परमेश्वर को आज अपनी संतानों से पशुओं के बलिदानों की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उसे बलिदानों की आवश्यकता है। सबसे मूल बलिदान जो वह हमसे मांगता है वह हमारे जीवन हैं (रोमियों 12:1)। वह नहीं कहता कि, "एक बलिदान लेकर आओ और इसे मेरे लिए वेदी पर रख दो।" बल्कि, वास्तव में, वह कहता है, "वेदी पर चढ़ जाओ। तुम वही बलिदान हो जो मुझे चाहिए" (देखें 2 कुरि. 8:5; 2 तीमु. 4:6)।

एक मसीही की वेदी (27:1-8)

इस्राएल के पास उनकी वेदी थी। क्या मसीहियों के पास एक वेदी है? नए नियम के समय में, कुछ लोग कह रहे थे कि मसीही वंचित थे क्योंकि, उनके पास यहूदियों के समान, कोई वेदी नहीं थी। इब्रानियों 13:10 कहता है, "हमारी एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं।" एक मसीही की वेदी क्या है? उत्तर अलग-अलग हैं, परन्तु, "वेदी" सम्भवतः "बलिदान" का प्रतीक है।[10] मसीहियों के रूप में, हमारे पास एक ऐसा बलिदान है जो केवल हमें लाभ पहुँचाता - क्रूस पर हमारे लिए मसीह का बलिदान। मूसा की व्यवस्था की वेदी हमें मसीह का बलिदान स्मरण करवाती है और हमें उसके लिए स्वयं को देने के इच्छुक बनने के लिए बुलाती है।

निरंतर जलता एक दीपक - "मेरी यह छोटी ज्योति" (27:20)

तम्बू में एक दीपक को जलाए रखा जाता था। उसी प्रकार से, मसीह के चेलों को "संसार की ज्योति" बनना है (मत्ती 5:14)। जिस प्रकार तम्बू की ज्योति निरंतर जलती रहती थी, हमें इस बात का ध्यान रखना है की हमारी "ज्योतियाँ" कभी न बुझें। हम चाहे कहीं भी हों, कुछ भी करते हों, लोगों को हमारे जीवन में हर समय परमेश्वर की ज्योति दिखनी चाहिए। एक बच्चे का गीत इस विचार को अच्छी तरह व्यक्त करता है: "सुसमाचार की मेरी यह छोटी ज्योति, मैं इसे चमकाऊँगा ... ।"[11]

समाप्ति नोट्स

[1]उम्बेर्टो कस्सूटो, *ए कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ एक्सोडस,* ट्रांस. इस्राएल अब्राहम्स (जेरुशलेम: मैग्नेस प्रेस, 1997), 362. [2]हालाँकि, भजन 118:27 का अनुवाद अनिश्चित है। जेम्स बर्टन के यह विचार कि सींग प्रार्थना में ऊपर उठे हाथों के समान दिखते थे और परमेश्वर से "रक्षा और सहायता" के लिए की जाने वाली प्रार्थना का प्रतीक थे, यह अधिक कल्पना के योग्य है। (देखें जेम्स बर्टन कोफ्फमन, *कमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकेंड बुक ऑफ़ मोसेस* [अबिलीन, टेक्स.: एसीयू प्रेस, 1985], 380-81.) [3]वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस," *द एक्स्पोसिटर्स बाइबल कमेन्ट्री* में, वॉल्यूम 2, *जेनेसिस-नंबर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 1990), 462. [4]एडवर्ड बॉल, "होर्न्स ऑफ़ द आल्टर," *इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया* में, रेव. एड., एड. ज्याँफ्री डब्ल्यू ब्रूमिले,

(ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी) एंड राल्फ गोवर, *द मैनर्स एंड कस्टम्स ऑफ़ बाइबल टाइम्स* (शिकागो: मूडी प्रेस, 1987), 2:758, 363 में चित्रों को देखें। [5]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 3 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 375. [6]पीटर एन्स, *एक्सोडस*, NIV एप्लीकेशन कमेन्ट्री में (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2000), 520. [7]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेन्ट्री*, टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 197. [8]उपरोक्त. 198. [9]कैसर, 464. [10]नील आर. लाइटफुट, *जीसस क्राइस्ट टुडे: ए कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1976), 250.

[11]ट्रेडिशनल, "दिस लिटिल लाइट ऑफ़ माइन," *सोंग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़,* कॉम्प. एंड एड. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मुनरो, एलए.: हॉवर्ड पब्लिशिंग को., 1994)।